P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-8* (Part-1) November- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

भारतीय विदेश नीति गुट निरपेक्षता से ससंलग्नता की ओर

कृष्ण कुमार शर्मा
सहायक निदेशक,
सह बाल विकास परियोजना अधिकारी,
महिला एंव बाल विकास विभाग,
कल्याणपुर, बाडमेंर, राजस्थान

सारांश

भारत ने 1947 के पश्चात अपनी विदेश नीति मे गुटनिरपेक्षता को प्रमुख स्तंभ के तौर पर शामिल किया और दोनो गुटो से दूरी बनाकर अपनी विदेश नीति को स्वतंत्र तरीके से संचालित किया लेकिन 1991 में सोवियत संघ के पतन के बाद बदलती वैश्विक परिस्थितियों में भारत ने अपनी विदेश नीति को गुटनिरपेक्षता से ससंलग्नता की ओर उन्मुख करके अपनी विदेश नीति को विस्तार प्रदान किया है।

मुख्य शब्द : विदेश नीति, निरपेक्षता, गुट निरपेक्षता।

प्रस्तावना

वर्तमान युग में विदेश नीति प्रत्येक देश के प्रशासन का अभिन्न अंग होती है प्रत्येक सरकार को अन्य राज्यों की सरकारों की दृष्टि को ध्यान में रखकर एक विशेष प्रकार का व्यवहार करना पडता है इसी व्यवहार का अध्ययन ही विदेश नीति है स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व तत्कालीन ब्रिटिश सरकार जो भी नीति निर्धारित करती वही भारतीय विदेश नीति होती थी स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत एक ऐसी विदेशनीति पर अग्रसर हुआ जो सभी देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित कर आपसी सहयोग और सद्भाव बढाने में मदद दे, आपसी विवादों को शांतिपूर्ण ढंग से निपटाने तथा अतंर्राष्ट्रीय शांति, सह–अस्तित्व द्वारा गुटबंदी से दूर रहने की वकालत करे। भारत ने विश्व मानचित्र पर स्वतंत्र रूप से प्रगट होते ही ऐसी विदेशनीति की सरचंना की जो गुट निरपेक्षता की राह पर चलकर अन्य देशो से मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित कर भारतीय हित का संवर्द्वन करे। स्वतंत्र भारत ने गुट निरपेक्षता की नीति अपनाकर दुनिया को एक नई राह दिखाई थी।[1]

अध्ययन का उद्वेश्य

शोधार्थी के अध्ययन का उद्वेश्य भारतीय विदेश नीति के प्रमुख आधार गुटनिरपेक्षता और शीतयुद्व के पतन के बाद विदेश नीति के संसलग्नता की ओर उन्मुख होते हुए स्वरूप को प्रदर्शित करना है।

साहित्यावलोकन

डा. वेद प्रताप वैदिक अपनी पुस्तक "भारतीय विदेश नीति : नये दिशा संकेत" में लिखते है कि विदेश नीति का क्षेत्र इतना व्यापक है कि उसे गुटनिरपेक्षता की परिधि में बांधा नही जा सकता।

नीरा चंडोक एंव प्रवीण प्रियदर्शी अपनी पुस्तक "कंटेपरेरी इण्डिया : इकॉनोमी, सोसायटी, पॉलिटिक्लस में लिखते है कि 1990 के दशक में जब भारत आर्थिक संकट से जूझ रहा था तो भारत ने विश्व के सभी देशों के साथ संलग्न होने की नीति की शुरूआत की।

गुटनिरपेक्षता

विदेश नीति का वह सिद्वान्त जिसके अन्तर्गत कोई भी देश अपने को शीतयुद्व तथा सैन्य संधियो से दूर रखते हुए अतंर्राष्ट्रीय संबंधो में अपने महत्वपूर्ण राष्ट्रीय हितो तथा शांति व सुरक्षा के अतंर्राष्ट्रीय उद्वेश्य की मांग के आधार पर सक्रिय रूप से भाग लेता है, गुट निरपेक्षता कहलाती है

द्वितीय विश्व युद्व के पश्चात विश्व दो गुटो–अमेरिकी गुट और सोवियत गुट में विभक्त हो चुका था ऐसे में भारत सहित नव–स्वतंत्र राष्ट्रो ने अपनी विदेश नीति को इन दोनो गुटो से स्वतंत्र रहकर अपने राष्ट्रीय हितो के आधार पर संचालित करने का निर्णय लिया। जंहा तक भारत का प्रश्न है भारतीय दार्शनिक परंपरा यही रही है कि विभिन्न मतों के प्रति समादर और सहिष्णुता का भाव रखते हुए "सत्यम, शिवम, सुन्दरम" के सिद्वान्त को आत्मसात कर किसी को भी सशंय सा संदेह की दृष्टि से न देखा जाना। भारत ने महात्मा बुद्व द्वारा दिये

गये विश्व मानवता के प्रति उपदेश का प्रसार किया है जिसमें शांति, सद्भाव, सह–अस्तित्व, अंहिसा तथा विश्व बधुंत्व की भावना पर बल दिया गया है।

भारतीय विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता को आधार–स्तंभ के रूप में अपनाकर अपने राष्ट्रीय हितों की पूर्ति का प्रयास किया गया। 1991 मे सोवियत संघ के पतन के साथ ही दुनिया से एक गुट की समाप्ति हो गई और इसी के साथ शीत युद्व का भी अंत हो गया तो संपूर्ण विश्व में गुटनिरपेक्षता की अवधारणा की प्रासंगिकता पर प्रश्न चिन्ह लगाये जाने लगे।

भारत ने तत्कालीन परिस्थितियों को देखते हए 1991 से उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की नीति अपनाई वैश्वीकरण के इस दौर में नये–नये आर्थिक समूहों का विकास हो रहा था ये आर्थिक समूह आर्थिक विकास के द्वारा राजनीतिक मुद्वो को सुलझाने पर बल देते थे भारत ने ऐसी परिस्थिति में अपने राष्ट्रीय हितों की पूर्ति के लिए विश्व के सभी देशों से तथा सभी आर्थिक समूहों से संलग्न होने की नीति की शुरूआत की। भारत ने अपनी विदेश नीति को आदर्शवादी से हटाकर यथार्थवाद की तरफ मोडा।[2]

ससंलग्नता

सामान्य अर्थो में संसलग्नता से तात्पर्य "जुडने" से लगाया जाता है भारतीय विदेश नीति के सदंर्भ में इसे देखे तो इसे विश्व के सभी देशों व आर्थिक समूहों से भारत के जुड़ाव से लिया जा सकता है।

ससंलग्नता के कारण

भारत ने तत्कालीन वैश्विक आर्थिक परिस्थितियों को देखते हुए अपनी विदेश नीति को गुट निरपेक्षता से संसलग्नता की ओर उन्मुख किया है इसके निम्न कारण है –:

1. शीतयुद्व के अंत के साथ ही सोवियत गुट का पतन और वारसा रूपी सैन्य गुट की समाप्ति।
2. वैश्विक स्तर पर विभिन्न आर्थिक समूहों का विकास।
3. भारत द्वारा उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की नीति अपनाना।
4. विश्व में राजनीतिक मुद्वो की जगह आर्थिक मुद्वों का प्रभावी होना।
5. भारत के समग्र विकास के लिए।
6. विश्व में भारत की छवि को और अधिक बढाने के लिए।
7. संपूर्ण विश्व के देशों के साथ सबंधो को सुधारने के लिए।
8. दक्षिण एशिया में अपनी नेतृत्वकारी भूमिका को बनाये रखने के लिए।
9. भारत को वैश्विक महाशक्ति बनाने के लिए।
10. देश में समावेशी विकास को बढावा देने के लिए।

भारत ने इन सभी कारणों से अपनी विदेश नीति को एक आयाम बढाकर सभी देशो व सगंठनो से सबंध स्थापित किये है। 1991 के पश्चात संसलग्नता की नीति के तहत भारत ने अमेरिका के साथ अपने सबंधों को निरन्तर विस्तारित रूप प्रदान किया है दोनों के बीच द्विपक्षीय व्यापार में तीव्र वृद्वि हुई है आर्थिक रूप से दोनो देशों के संबंध मजबूत हो रहे है[3] जार्ज बुश जूनियर , बराक ओबामा और वर्तमान अमेरिका राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के कार्यकाल में लगातार दोनों देशों के संबंधों को प्रत्येक क्षेत्र में बढाया जा रहा है सितम्बर 2014 में भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की सफल अमेरिका यात्रा के पश्चात अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा का 66 वें भारतीय गणतंत्र दिवस का अतिथि बनना , भारत–अमेरिका संबंधों में बढते विश्वास को प्रदर्शित करता है।

वर्ष 1990 के बाद भारत–चीन के बीच व्यापारिक संबधों को अत्यधिक महत्व दिया गया और सीमा विवाद बने रहने के बावजूद दोनो देशों के बीच द्विपक्षीय व्यापार में तेजी से वृद्वि हुई। चीन द्वारा भारतीय सीमा का लगातार अतिक्रमण, दक्षिणी चीन सागर विवाद, ब्रह्मपुत्र नदी पर चीन द्वारा बांध के निर्माण का मुद्दा, तिब्बत विवाद, चीन की मोतियों की माला नीति के द्वारा भारत को घेरने की नीति इन सबके बावजूद भी चीन वर्तमान में भारत का सबसे बडा द्विपक्षीय व्यापारिक भागीदार देश है वर्ष 1992 से वर्ष 2010 के बीच भारत चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार में लगभग 18 गुना की वृद्वि हुई है यह भारत की संसलग्नता की नीति का उदारण है

शीत युद्व के पश्चात भारत और रूस के संबंध यथार्थ , व्यावहारिक और पारस्परिकता पर आधारित है वर्ष 2000 के दिल्ली घोषणा–पत्र में भारत और रूस के सामरिक सबंधों को और मजबूत करने का निर्णय लिया गया दोनो देशों के मध्य वर्ष 2000 से प्रत्येक वर्ष वार्षिक सामरिक शिखर वार्ता आयोजित होती है सामरिक , अनुसंधान , विकास , तकनीकी हस्तान्तरण, अंतरिक्ष आर्थिक इन सभी क्षेत्रों में भारत एंव रूस के संबधों मे लगातार विकास होता जा रहा है।[4]

संसलग्नता की नीति के तहत भारत ने जापान के साथ अपने संबंधों को बढाया है 1991 में भारतीय अर्थव्यवस्था को सकंट से उबारने के लिए जापान ने भारत को 500 मिलियन डॉलर की आर्थिक सहायता प्रदान की। जापान ने बिजली, गैस, परिवहन, दूरसंचार एंव अन्य आधारभूत संरचनाओ में विकास के लिए भारत को ऋण प्रदान किया। ' दिल्ली मैट्रो प्रोजेक्ट, जापानी अनुदान का सबसे बडा उदारण है इसके अतिरिक्त 'दिल्ली–मुबंई औधेगिक कॉरिडोर ' परियोजना के लिए 100 बिलियन डॉलर सहायता का आश्वासन दिया इसके साथ ही भारत में अहमदाबाद से मुबंई बुलेट ट्रेन परियोजना को भी जापान द्वारा वित्तीय एंव तकनीकी सहायता प्रदान की जा रही है।

भारत ने संसलग्नता की नीति के तहत यूरोपीय यूनियन के साथ अपने संबंधो को बढाया है जून 2000 से भारत और यूरोपीय यूनियन के मध्य शिखर वार्ता की शुरूआत हुई। दोनो के मध्य द्विपक्षीय व्यापार तथा निवेश के समझौते को विस्तृत एंव व्यापक किया जा रहा है[5] भारत और यूरोपीय यूनियन सबसे बडे द्विपक्षीय व्यापारिक भागीदार है दोनो के मध्य 76 बिलियन अमेरिकी डॉलर का द्विपक्षीय व्यापार है। यूरोपीय यूनियन के प्रमुख देशों यथा–जर्मनी , ब्रिटेन , फ्रांस के साथ भारत के सबंध

आर्थिक, सामरिक , अनुसंधान एंव विकास के क्षेत्र में लगातार बढते जा रहे है।

भारत ने अफ्रीका महाद्वीप के देशों के साथ भी अपने सबंधों को बढाया है शीतयुद्वोतर युग में भारतीय विदेश नीति में अफ्रीका महाद्वीप के साथ निवेश, व्यापार एंव वाणिज्य पर बल दिया बया। वर्ष 2001–02 में 5.5 बिलियन डॉलर का व्यापार दोनो के मध्य था जो 2016 में बढकर 72 बिलियन डॉलर तक हो गया। अफ्रीका महाद्वीप के देशों जिनमें दक्षिणी अफ्रिका ,नाइजीरिया, केन्या , सूडान , मॉरीशस , अल्जीरिया , घाना तथा तजांनिया के साथ भारत के व्यापारिक संबंध सर्वाधिक है अफ्रीका महाद्वीप के देशों में कुपोषण है तथा खाद्यान्न का अभाव है इसलिए खाद्य सुरक्षा पर भारत और अफ्रीका के मध्य सहयोग हो रहा है। भारत और अफ्रीका के आधारभूत सरचंना के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है इस संदर्भ में रेल का विकास , सूचना प्रौधौगिकी, पार्क का निर्माण, टेली, शिक्षा, टेली मेडिसिन के क्षेत्र में भारत का योगदान उल्लेखनीय है।

निष्कर्ष

भूमण्डलीकरण के युग में भारत लैटिन–अमेरिकी संबंधो में तेजी से सुधार हुआ वर्ष 1997 में वाणिज्य मत्रांलय ने वर्ष 1997 में 'फोकस लैटिन अमेरिका' की नीति अपनाई। लैटिन अमेरिकी देश ब्राजील के साथ भारत के ऊर्जा , रक्षा , कृषि, खनन , ऑटोमोबाइल , सूचना प्रौधोगिकी के क्षेत्र में प्रगाढ सबंध है ब्राजील के अलावा अर्जेटीना, मैक्सिको के साथ भी भारत के व्यापारिक और वाणिज्यिक संबंध है। इसके अतिरिक्त भारत अनेक समूहों जैसे नाफ्टा,जी–8 के साथ अपने संबंधों को बढा रहा है इसके अतिरिक्त भारत जी–20, ब्रिक्स, सार्क, आसियन रीजनल फोरम का सदस्य होकर भारत अपने आर्थिक विकास को लगातार बढा रहा है तथा अपनी विदेश नीति को संसलग्नता पर आधारित कर रहा है।

सदंर्भ ग्रन्थ सूची

1. *डा. वेद प्रताप वैदिक, भारतीय विदेश नीति : नये दिशा संकेत, विकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा. लिमिटेड , 1981, पृ. सं. 84*
2. *नीरा चंडोक, प्रवीण प्रियदर्शी, कंटेपरेरी इण्डिया : इकॉनोमी, सोसायटी,पॉलिटिक्स, पियर्सन इजुकेशन, नई दिल्ली, 2009 पृ. सं. 105*
3. *देबा मित्र मित्रा मधुचन्द्र घोष, इण्डियाज फॉरेन पॉलिसी : दी चेंजिग डायनेमिक्स, इकफाई यूनिवर्सिटि प्रेस 2009 , पृ. सं. 133*
4. *अन्नपूर्णा नौटियाल, चैलेंजेस टू इण्डियाज फॉरेन पॉलिसी इन दि न्यू एरा : नीड फॉर ए हॉलिस्टिक एप्रोच, ज्ञान पब्लिशिंग हाऊस , 2006 पृ. सं. 213*
5. *राजन हर्ष. के. एम. सेठी, एनगेजिंग विद द वर्ल्ड : क्रिटिकल रिफ्लेक्शन्स ऑन इण्डियाज फॉरेन पॉलिसी, ओरियंट लौगमैन पब्लिशर्स 2005 पृ. सं. 128*